



कृषि विज्ञान केन्द्र, शाहडोल, म.प्र.



जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

अंक : 64 (जुलाई से सितम्बर 2024)

सामयिक लेख

खरीफ दलहनी फसलों में खरपतवारों की रोकथाम

गहरी जुताई द्वारा : रबी फसलों की कटाई के बाद गर्मी में एक बार खेत की गहरी जुताई करने से खरपतवारों के बीज एवं कंद जमीन के ऊपर आ जाते हैं, जो तेज धूप में अपनी अंकुरण क्षमता खोकर निष्क्रिय हो जाते हैं। तेज धूप में कीटों एवं बीमारियों के स्रोत नष्ट हो जाते हैं।

स्टेल सीड बेड (बुवाई के पहले खरपतवारों को नष्ट करना) : खरीफ मौसम की पहली बरसात के बाद तथा रबी फसलों की बुवाई से पहले खाली खेत की हल्की सिंचाई करने से अधिकांश खरपतवार उग आते हैं। जब ये खरपतवार 2-3 पत्ती के हो जाए तो उन्हें शाकनाशी (ग्लायफोसेट अथवा पैराक्वाट का 0.50% घोल) द्वारा अथवा यांत्रिक विधि से जुताई करके नष्ट किया जा सकता है, जिससे मुख्य फसल में खरपतवार की संख्या में काफी कमी की जा सकती है।

शुद्ध एवं साफ बीज का प्रयोग : खरपतवार नियंत्रण हेतु कृषकों को सर्वप्रथम उन सभी प्रक्रियाओं पर ध्यान देना चाहिए जिससे खरपतवारों की संख्या को खेत में कम किया जा सके। बुवाई के समय खरपतवार रहित एवं प्रमाणित बीजों का उपयोग करके खरपतवार की सघनता पर काबू पाया जा सकता है। कुछ फसल के बीजों की बुवाई के पहले, छन्ने से साफ करने पर, खरपतवारों के बीज आकार में छोटे होने के कारण नीचे गिर जाते हैं।

किस्मों का चुनाव एवं बुवाई की विधि : जहाँ पर खरपतवार की रोकथाम के साधनों में कमी हो, वहाँ पर फसल की ऐसी प्रजातियों का उपयोग करना चाहिए, जिनकी प्रारंभिक बढ़वार, खरपतवार की तुलना में अधिक हो। ऐसी प्रजातियाँ खरपतवारों से प्रतिस्पर्धा करके उन्हें नीचे दबा देती हैं। छिटकवा विधि के बजाय कतारों में बुवाई करने से खरपतवारों की संख्या में अधिक कमी पायी जाती है तथा साथ ही उनके नियंत्रण में भी आसानी होती है।

फसल चक्र : एक ही फसल को लगातार एक ही खेत में बोने से खरपतवारों की संख्या काफी अधिक हो जाती है, तथा उसके नियंत्रण में काफी परेशानी उठानी पड़ती है। अतः आवश्यक है, कि एक फसल को बार - बार एक ही खेत में न बोया जाये तथा उचित फसल-चक्र अपनाया जाये।

अर्न्तवर्ती फसलें उगाकर : कुछ दलहनी फसलें जैसे अरहर, जिनके कतारों के बीच की दूरी 60-90 सेमी. तक होती है, खरपतवार आसानी से इन कतारों के बीच उगकर फसल की पैदावार को कम कर देते हैं। इन कतारों के बीच यदि किसान भाई जल्दी बढ़ने वाली तथा कम समय की फसलें जैसे - लोबिया, मूंग आदि को उगाये तो खरपतवारों पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है तथा साथ ही साथ अतिरिक्त पैदावार भी मिल सकती है।

मृदा के सौर्यकरण द्वारा : गर्मियों में मृदा के सौर्यकरण द्वारा खरपतवारों की संख्या में काफी कमी की जा सकती है। इस विधि से मई माह में खेत में पानी लगाकर उसे सफेद पोलीथीन से ढंक दिया जाता है, जिससे 20-25 दिनों में मृदा का तापक्रम 10-12 डिग्री सेन्टीग्रेट बढ़ने के कारण खरपतवारों के बीजों की अंकुरण क्षमता समाप्त हो जाती है।

यांत्रिक विधि : खरपतवारों पर काबू पाने की यह सरल एवं प्रभावी विधि है। दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवार नाशक दवाईयों के बजाय निराई-गुड़ाई की सिफारिश की जाती है। खरीफ दलहनी फसलों में दो बार निराई-गुड़ाई आवश्यक होती है। रबी फसलों में 30-35 दिन बाद एक बार निराई-गुड़ाई करके खरपतवारों पर प्रभावी ढंग से नियंत्रण पाया जा सकता है। कतारों में बोई गई फसलों में हो चलाकर भी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। परन्तु यांत्रिक विधि से खरपतवार नियंत्रण में समय और मजदूर अधिक लगते हैं, जिससे प्रति इकाई क्षेत्रफल में लागत भी अधिक आती है।

खरपतवार नाशी रसायनों का प्रयोग : समय को देखते हुए खरपतवारों का नियंत्रण शाकनाशी रसायनों द्वारा करने से जहाँ एक ओर खरपतवारों का उचित समय पर नियंत्रण हो जाता है, वहीं दूसरी ओर लागत एवं समय की भी बचत होती है। लेकिन

खरपतवार नाशकों का उपयोग करते समय यह ध्यान रखना होगा कि उसकी उचित सान्द्रता को समुचित विधि द्वारा उपयुक्त समय पर प्रयोग करें। खरीफ की फसलों में प्रयोग किए जाने वाले रसायनों का प्रयोग तीन विधियों से किया जाता है।

अ. बोने से पहले भूमि में मिलाकर : इस प्रकार के खरपतवार नाशकों (जैसे फलूक्लोरालिन एवं ट्रायफ्लोरालिन) को फसल की बुवाई के पहले खेत के अंतिम तैयारी करते समय डालकर मिला देना चाहिए।

ब. अंकुरण के पूर्व छिड़काव : इस तरह के खरपतवार नाशक बुवाई के बाद किन्तु फसल व खरपतवार के अंकुरण के पहले खेत में छिड़क दिये जाते हैं। जहाँ तक हो सके इनका प्रयोग फसल बोने के 48 घंटे में कर देना चाहिए।

स. अंकुरण के बाद छिड़काव : इस प्रकार के शाकनाशी रसायनों का प्रयोग बुवाई के 20-25 दिन के बाद किया जाता है। जैसे क्लोबेन, आसमिक्स, पयूजीनेड इमाजेथाइपर आदि।

नेपियर घास

महत्व : इसका चारा पशुओं को काटकर खिलाया जाता है। इसका चारा पशुओं के लिए उस समय काम आता है जब अन्य चारा कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसकी कई कटाई ली जाने के कारण काफी मात्रा में चारा प्राप्त होता है। इससे पशु के लिए हे (Hay) भी तैयार की जाती है। यह पौष्टिक चारा है।

जलवायु : वह क्षेत्र नेपियर घास की खेती के लिए सर्वोत्तम माने जाते हैं, लगभग 200 सेमी० वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए उत्तम है। ज्यादातर अधिक ठण्डी जलवायु में फसल की अच्छी वृद्धि होती है।

भूमि : इसे विभिन्न प्रकार की भूमि में उगा सकते हैं। परन्तु फसल की उपज भारी भूमियों की अपेक्षा हल्की भूमि में अधिक होती है। उत्तम उपज के लिए दोमट अथवा बलुआ दोमट मृदा उपयुक्त है।

खेत की तैयारी : खेत की तैयारी के लिए पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से की जाती है। इसके बाद 2-5 जुताइयों देशी हल से करते हैं। मिट्टी को भुरभुरा करने के लिए प्रत्येक जुताई के बाद पाटे का प्रयोग किया जाता है।

जातियाँ : पूसा जाइन्ट नेपियर नेपियर-1, पूसा नेपियर-2 एवं इगफ्री-3

बुवाई का समय :

वर्षा ऋतु की बुवाई : जिन स्थानों पर सिंचाई की सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। वहाँ पर नेपियर घास की बुवाई वर्षा ऋतु में जुलाई से अगस्त तक की जाती है।

बसन्त ऋतु की बुवाई : नेपियर घास की बुवाई का यह सबसे उत्तम समय (फरवरी से मार्च) होता है। परन्तु इस समय फसल की बुवाई उन स्थानों पर की जाती है जहाँ सिंचाई की सुविधायें उपलब्ध हों।



“अरहर की भरपूर पैदावार का मूल मंत्र - धारवाड़ पद्धति का अपनाओ तंत्र”

बोने का ढंग एवं बीज की मात्रा : नेपियर घास की बुवाई वानस्पतिक प्रसारण (Vegetative Propagation) विधि से की जाती है। इस प्रसारण विधि में फसल उगाने के लिए निम्नलिखित तीन पदार्थों का प्रयोग किया जा सकता है :-

1. भूमिगत तने जिन्हें राइजोम (Rhizomes) कहते हैं।
2. जड़ौधों द्वारा (Root Slip)
3. तने के टुकड़ों द्वारा (Stem Cutting)

इन पदार्थों में जड़ौधों पर्याप्त मात्रा में मिलना कठिन होता है और श्रम भी अधिक लगता है।

खाद : सामान्य अवस्था में 120-150 किलोग्राम नाइट्रोजन और 50-70 किलोग्राम फॉस्फोरस प्रति वर्ष फसल में देना चाहिये।

सिंचाई : हल्की भूमि में भारी भूमि की अपेक्षा सिंचाई जल्दी करनी चाहिये। वर्षा ऋतु में सिंचाई की जरूरत नहीं होती है। ग्रीष्मकाल में 10-12 दिन और अन्य मौसम में 20-25 दिन में सिंचाई करते हैं।

निंदाई-गुड़ाई : बुआई के 15 दिन बाद अंधी गुड़ाई करनी चाहिये। खेत में पानी सोखने की शक्ति बढ़ जाती है। प्रत्येक कटाई के करने के बाद देशी हल, कल्टीवेटर या फावड़े से निंदाई-गुड़ाई करते हैं जिससे खरपतवार नष्ट हो जाता है।

कटाई : नेपियर घास की प्रथम कटाई बुआई के लगभग 70-80 दिन बाद करते हैं जब पौधे की कटाई करें, तब पौधा एक मी. से अधिक ऊंचाई का न हो। फसल की अन्य कटाई 6-7 सप्ताह के अन्तर से की जाती है। पौधे की कटाई भूमि सतह से 8-10 सेमी० ऊपर से करें। सामान्य अवस्था में प्रतिवर्ष लगभग 4-6 कटाई मिल जाती है।

उपज : नेपियर घास के हरे चारे कि उपज साधारणतया 1000 किं० प्रति हेक्टेयर होती है। परन्तु अच्छी फसल से 2500 किं० प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त हो जाती है।

वर्मी कम्पोस्ट

केंचुआ एवं केंचुआ खाद : केंचुआ कृषकों का मित्र एवं भूमि की आंत कहा जाता है। यह सेन्द्रिय पदार्थ, ह्यूमस व मिट्टी को एकसार करके जमीन के अंदर अन्य परतों में फैलाता है। इससे जमीन पोली होती है व हवा का आवागमन बढ़ जाता है।

केंचुए के पेट में जो रासायनिक क्रिया व सूक्ष्म जीवाणुओं की क्रिया होती है, उससे भूमि में पाये जाने वाले नत्रजन, स्फुर, पोटाश, कैल्शियम व अन्य सूक्ष्म तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है। ऐसा पाया गया है कि मिट्टी में नत्रजन 7, फास्फोरस 11 और पोटाश 14 गुना बढ़ता है।

केंचुए के पेट में मिट्टी व सेन्द्रिय पदार्थ अनेक बार अंदर बाहर आते जाते हैं इससे जमीन में ह्यूमस की मात्रा बढ़ती है तथा यह ह्यूमस केंचुए के माध्यम से मिट्टी में सब दूर फैलता है। इस क्रिया से जमीन प्राकृतिक रूप से तैयार हो जाती है, जमीन का pH भी सही बना रहता है।

केंचुए अकेले जमीन को सुधारने एवं उत्पादकता वृद्धि में सहायक नहीं होते, बल्कि इनके साथ सूक्ष्म जीवाणु सेन्द्रिय पदार्थ, ह्यूमस इनका कार्य भी महत्वपूर्ण है। अगर किसी कारण इनकी उपलब्धता कम रहती है तो केंचुए की कार्य क्षमता में कमी आ जाती है।

केंचुए सेन्द्रिय पदार्थ, एवं मिट्टी खाने वाले जीव हैं जो सेप्रोफेगस वर्ग में आते हैं। इस वर्ग में दो प्रकार के केंचुए होते हैं।

अ. डेर्ट्रीटीकोरस केंचुआ : ये जमीन के ऊपरी सतह पर पाये जाते हैं। ये लाल, चाकलेटी रंग, चपटी पूँछ के होते हैं। इनका मुख्य उपयोग खाद बनाने में होता है। ये ह्यूमस फारमर केंचुए कहे जाते हैं।

ब. जी.ओ. फेगस केंचुआ : ये जमीन के अन्दर पाये जाते हैं। ये रंगहीन सुस्त रहते हैं ये ह्यूमस एवं मिट्टी का मिश्रण बनाकर जमीन पोली करते हैं।

केंचुआ खाद की विशेषताएं : इस खाद में बदबू नहीं होती है, तथा मक्खी, मच्छर भी नहीं बढ़ते हैं जिससे वातावरण स्वस्थ रहता है। इससे सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ-साथ नाइट्रोजन 2½ से 3%, फास्फोरस 1 से 1½%, पोटाश 1½ से 2% मिलता है।

- ❖ खाद तैयार करने में प्रक्रिया स्थापित हो जाने के बाद 1 से 1½ माह लगता है।
- ❖ केंचुआ पूर्णतः तैयार होने पर 21 दिन में भी खाद तैयार कर देता है।
- ❖ 1 टन केंचुआ खाद प्राप्त करने हेतु 100 वर्गफुट की नर्सरी बेड पर्याप्त होती है।
- ❖ केंचुआ खाद की केवल 2 टन मात्रा प्रति हेक्टेयर आवश्यक है।

केंचुआ खाद तैयार करने की विधि :

- ❖ जिस कचरे से खाद तैयार की जाना है उसमें से कांच, पत्थर, धातु के टुकड़े अलग करना आवश्यक है।
- ❖ केंचुओं को आधा अपघटित सेन्द्रिय पदार्थ खाने को दिया जाता है।
- ❖ भूमि के ऊपर नर्सरी बेड तैयार कर लकड़ी से हल्का पीटकर पक्का व समतल बना लें।
- ❖ इस तह पर 6-7 से.मी. (2-3 इंच) मोटी बालू रेत या बजरी की तह बिछायें।

- ❖ बालू रेत की इस तह पर 6 इंच मोटी दोमट मिट्टी की तह बिछायें। दोमट मिट्टी न मिलने पर काली मिट्टी में रॉक पाउडर (पत्थर का बारीक चूरा) मिलाकर बिछायें।
- ❖ इस पर आसानी से अपघटित हो सकने वाले सेन्द्रिय पदार्थ की (नारीयल की बूछ, गन्ने के पत्ते, ज्वार के डंठल एवं अन्य) दो इंच मोटी सतह बनाई जावे।
- ❖ इसके ऊपर 2-3" पकी हुई गोबर खाद डाली जावे।
- ❖ 100 वर्गफुट नर्सरी बेड के लिये 4 से 5 हजार केंचुओं की आवश्यकता होती है। केंचुओं को पकी हुई गोबर खाद की सतह पर फैलाया जावे।
- ❖ केंचुओं को डालने के उपरांत इसके ऊपर गोबर, पत्ती आदि की 6 से 8 इंच की सतह बनाई जावे। अब इसे मोटी टाट पट्टी से ढांक दिया जावे।
- ❖ किनारे से टाट पट्टी पर आवश्यकतानुसार प्रतिदिन पानी छिड़कते रहें, ताकि 45 से 50 प्रतिशत नमी बनी रहे। अधिक नमी/गीलापन रहने से हवा अवरुद्ध हो जावेगी और सूक्ष्म जीवाणु तथा केंचुए कार्य नहीं कर पायेंगे और केंचुए मर भी सकते हैं।
- ❖ नर्सरी बेड का तापमान 25 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेड होना चाहिये।
- ❖ नर्सरी बेड में गोबर की खाद कड़क या ढेले बन गये हो तो इसे हाथ से तोड़ते रहना चाहिये, सप्ताह में एक बार नर्सरी बेड का कचरा ऊपर नीचे करना चाहिये।
- ❖ 30 दिन बाद छोटे-छोटे केंचुए दिखना शुरू हो जावेंगे।
- ❖ 31 वें दिन इस बेड पर कूड़े-कचरे की 2 इंच मोटी तह बिछायें और उसे नम करें।
- ❖ इसके बाद हर सप्ताह दो बार कूड़े-कचरे की तह पर बिछाएं। बायोमास की तह पर पानी छिड़ककर नम करते रहें।
- ❖ 3-4 तह बिछाने के 2-3 दिन बाद उसे हल्के से ऊपर नीचे कर दें व नमी बनाए रखें।
- ❖ 42 वें दिन बाद पानी छिड़कना बंद कर दें।
- ❖ इस पद्धति से डेढ़ माह में खाद तैयार हो जाता है। यह चाय के पाउडर जैसा दिखता है तथा इसमें मिट्टी के समान सौंधी गंध होती है।
- ❖ खाद निकालकर छोटे-छोटे ढेर बना दें, जिससे केंचुयें खाद की निचली सतह में रह जावें। खाद हाथ से अलग करें गैती, कुदाली, खुरपी आदि का प्रयोग न करें।
- ❖ केंचुए पर्याप्त बढ़ गए होंगे, आधे केंचुओं से पुनः वही प्रक्रिया दोहरायें और आधे से नया नर्सरी बेड बनाकर खाद बनाएं। इस प्रकार हर 50-60 दिन बाद केंचुए की संख्या के अनुसार एक दो नये बेड बनाकर खाद आवश्यकतानुसार बनायें।
- ❖ नर्सरी को तेज धूप व वर्षा से बचाने के लिए घास-फूस का शेड बनाना आवश्यक है।

मिट्टी की दृष्टि से

- ❖ केंचुए से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है एवं जलधारण क्षमता भी बढ़ती है।
- ❖ भूमि का उपयुक्त तापक्रम बनाये रखने में सहायक।
- ❖ भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा, अतः सिंचाई जल की बचत होगी।
- ❖ केंचुए नीचे की मिट्टी ऊपर लाकर, उसे उत्तम प्रकार की बनाते हैं।
- ❖ केंचुआ खाद में ह्यूमस भरपूर मात्रा में होने से नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश एवं अन्य सूक्ष्म द्रव्य पौधों को भरपूर मात्रा में व जल्दी उपलब्ध होते हैं।
- ❖ भूमि में उपयोगी जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि होती है।

कृषकों की दृष्टि से लाभ :

- ❖ भूमि की उपजाऊ क्षमता में एवं सिंचाई के अंतराल में वृद्धि होती है।
- ❖ रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने के साथ काश्त-लागत में कमी आती है।

पर्यावरण की दृष्टि से :

- ❖ भूमि के जलस्तर में वृद्धि होती है।
- ❖ मिट्टी, खाद्य पदार्थ व जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है।
- ❖ कचरे का उपयोग खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी होती है।

अन्य उपयोग :

- ❖ केंचुए से प्राप्त कीमती अमीनो एसिड्स एवं एन्जाइम्स से दवायें तैयार की जाती है।
- ❖ पक्षी, पालतू जानवर, मुर्गियों तथा मछलियों की खाद्य सामग्री के रूप में उपयोगी है।
- ❖ आयुर्वेदिक औषधियां तैयार करने में इसका उपयोग होता है।
- ❖ पाउडर, लिपिस्टिक, मलहम व कीमती प्रसाधन तैयार करने हेतु केंचुआ उपयोगी है।
- ❖ केंचुए के सूखे पाउडर में 60-65% प्रोटीन होता है, जो खाने में प्रयोग किया जाता है।

केंचुआ खाद उपयोग की सावधानियाँ :

- ❖ जमीन में केंचुआ खाद का उपयोग करने के बाद रासायनिक खाद व कीटनाशक दवा का उपयोग न करें।
- ❖ केंचुओं को नियमित अच्छी किरम का सेन्द्रिय पदार्थ देते रहना चाहिये।
- ❖ उचित मात्रा में भोजन एवं नमी मिलने से केंचुए क्रियाशील रहते हैं।

केन्द्र द्वारा सम्पादित गतिविधियाँ (अप्रैल 2024 से जून 2024)

कृषक प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1.	इन्क्लाइंड प्लेट प्लांटर के द्वारा ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई एवं जल बचत सिंचाई प्रणाली का आंकलन (जायद 2024)।	0.4	05
2.	छोटे और सीमांत किसानों के लिए मुर्गी पालन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली का आंकलन।	0.4	05
3.	छोटे और सीमांत किसानों के लिए बत्तख-मछली आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली का आंकलन।	0.4	05
4.	धान की सीधी बुआई में अंकुरण पूर्व एवं पश्चात् खरपतवारनाशकों का आंकलन।	0.4	05

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1.	एकल पंक्ति सब्जी रोपण यंत्र का प्रदर्शन।	02	05
2.	बैकयार्ड मुर्गी पालन प्रणाली के तहत मुर्गियों के लिए अजोला का प्रदर्शन।	02	05
3.	सीड ड्रिल द्वारा डायरेक्ट सीडेड राइस तकनीक का प्रदर्शन।	02	05
4.	आदिवासी उपयोजना अंतर्गत ग्रीष्मकालीन मूंग का प्रदर्शन।	12	30

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	कार्यक्रम संख्या	दिवस	लाभार्थी संख्या
1	कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण	26	26	628
2	कौशल विकास प्रशिक्षण	06	51	216
3	कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी प्रशिक्षण	01	01	33
4	प्रायोजित प्रशिक्षण	04	04	393

अन्य विस्तार गतिविधियाँ

- दिनांक 23-24.04.2024 को पंडित शम्भूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल के विद्यार्थियों ने केन्द्र में व्यवसायिक प्रशिक्षण अंतर्गत 'जैविक खेती' विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें उन्हें जैविक खेती की जानकारी व उसे अपनाने पर जोर दिया गया।
- दिनांक 25.04.2024 को शासकीय इंदिरा गांधी कन्या महाविद्यालय, शहडोल के विद्यार्थियों ने केन्द्र में व्यवसायिक प्रशिक्षण अंतर्गत 'रेशम कीट पालन' विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें उन्हें रेशम उद्योग को कम लागत में लगाने के विषय में जानकारी प्रदान की गयी।
- दिनांक 29.04.2024 को केन्द्र में कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत पंडित शम्भूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय व इंदिरा गांधी कन्या महाविद्यालय शहडोल के 29 विद्यार्थियों को कृषिवानिकी पद्धति के अन्तर्गत भूमि उपयोग पर जानकारी प्रदान की गयी।
- दिनांक 03.05.2024 को राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा प्रायोजित 'जलागम विकास परियोजना' के अन्तर्गत ग्राम परखुंडी में जल संरक्षण एवं जैविक खेती विषय पर कृषक संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कृषकों को खेत में ड्रिप सिंचाई सिस्टम या सिंक्रलर सिंचाई सिस्टम लगवाने से होने वाली जल की बचत के बारे में जानकारी दी गयी।



- दिनांक 06.05.2024 को सृजन फाउंडेशन पुष्पराजगढ़, जिला अनूपपुर के किसानों का दल ने केंद्र का भ्रमण कर जैविक एवं फसलों में सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली की तकनीकियों की जानकारी प्राप्त की। किसानों को जैविक व प्राकृतिक खेती के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी गयी।
- दिनांक 13.05.2024 को शास. पंडित शम्भूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल के विद्यार्थियों ने केन्द्र में व्यवसायिक प्रशिक्षण अंतर्गत 'जैविक खेती' विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। उन्हें जैविक विधि द्वारा खेती करने की जानकारी प्रदान की गयी, जिससे आय अधिक प्राप्त होती है तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में भी जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं।
- दिनांक 05.06.2024 को केन्द्र में विश्वपर्यावरण दिवस एवं कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें पेड़ पौधों व वन की परिभाषा, महत्व, लाभ प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष एवं मानव जीवन में होने वाले उपयोग और विभिन्न वन नीति 1988, वन अधिनियम 1927, वन्य जीव अधिनियम 1972 राष्ट्रीय उद्यान, अभ्यारण्य, वनों के प्रकार एवं उनसे प्राप्त उत्पाद व जल जंगल जमीन की सुरक्षा, उत्पादन देखभाल पर विस्तृत वर्णन के साथ कार्बन डायऑक्साइड, कार्बनमोनो आक्साइड, जहरीली गैसों के दुष्परिणाम, पर विस्तृत जानकारी दी।



- दिनांक 01.06.2024 से 27.06.2024 तक केन्द्र में भारतीय कृषि कौशल परिषद नईदिल्ली द्वारा जिले के 25 प्रशिक्षार्थियों को जैविक खेती विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें उन्हें फसलों के उत्पादन वृद्धि हेतु रसायनों जैसे उर्वरकों, कीटनाशक एवं खरपतवारनाशी दवाओं के बढ़ते प्रयोग एवं जैविक खेती की विधियों के बारे में जानकारी दी गई।
- दिनांक 26.06.2024 को केंद्र एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम मझगवां पंचायत विकासखंड सोहागपुर में खरीफ फसलें धान, मक्का, कोदो, कुटकी के बीजों का वितरण एवं कृषक श्रीमती ओलोदिया इक्का गांव जरवाही को पैडीट्रांसप्लांटर मशीन वितरण किया गया। इस अवसर पर जयसिंहनगर विधानसभा की लोकप्रिय विधायक मा. श्रीमती मनीषा सिंह उपस्थित रहीं।
- दिनांक 27.06.2024 को केंद्र एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम देवरवा पंचायत विकासखंड ब्योहारी में खरीफ फसलें धान, मक्का, कोदो, कुटकी के बीजों का वितरण एवं पैडी ट्रांसप्लांटर मशीन का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर ब्योहारी विधानसभा के लोकप्रिय विधायक मा. श्री शरद जुगलाल कोल उपस्थित रहें।



आगामी माह के कृषि कार्य (जुलाई से सितम्बर 2024)

जुलाई माह में कृषि कार्य

- वर्षा होने पर सभी खरीफ फसलों की बुवाई करें।
- बुवाई उपयुक्त प्रजातियों एवं उचित बीज दर से करें।
- बीज को थाइरम 2 ग्रा.+ कार्बेन्डाजिम 1 ग्रा. दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। बुवाई के समय आधार उर्वरकों का प्रयोग करें।
- मक्का व ज्वार के साथ मूंग या सोयाबीन की अंतरवर्तीय खेती करें।
- फलदार वृक्षों के खुदे गड्ढे की भराई कर पौध रोपण के लिये तैयार करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च एवं अगेती गोभी की पौध की खेत में रोपाई कर हल्की सिंचाई करें।
- पशुओं को खुरपका-मुँहपका एवं गलघोटू आदि बीमारियों का टीका लगावें।

अगस्त माह के कृषि कार्य

- धान, मक्का, ज्वार व अन्य अनाज वाली फसलों में नत्रजन की शेष मात्रा दें।
- सभी दलहनी फसलों की बुवाई के 30 दिन के अन्दर निंदाई- गुड़ाई पूर्ण कर लें।
- सोयाबीन में 'गर्डल वीटल' का प्रकोप यदि हो तो फसल में इन्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 333 मि.ली./हे. या क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.सी. दवा का 100 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- खरीफ प्याज में निंदाई-गुड़ाई करें एवं 30-40 दिन बाद 50 कि.ग्रा. नत्रजन/हे. उपयोग करें।
- पपीता में तना सड़न की रोकथाम हेतु 'बोर्डो मिश्रण' या ताँबा युक्त फफूंद नाशक दवा का छिड़काव 10 दिन के अंतराल में करें।
- सब्जियों की फसल में कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु पौध संरक्षण के उपाय अपनायें।
- पशुओं में गौमाता रोग का टीका लगवायें।
- पशुबाड़े में वर्षा का पानी इकट्ठा ना होने दें।

सितम्बर माह के कृषि कार्य

- धान में तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1.5 ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- सोयाबीन में गर्डल वीटल कीट के नियंत्रण हेतु इन्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 333 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- तिल की फसल में पत्ती व फली छेदक कीट नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 ई.सी. या क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 1-1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पकी हुई मूंग, उड़द, तिल, जल्दी पकने वाली धान व मक्का फसलों की कटाई करें।
- भूमि में नमी संरक्षण करें। आवश्यकता होने पर तोरिया, कुसुम और सितम्बर अंत तक अलसी की बोनी करें।
- सिंचित दशा में अगेती मटर व आलू की बुवाई 15 सितम्बर से शुरू करें।
- पत्ता गोभी, फूल गोभी की पौध तैयार करें।
- पशुओं में खुरपका-मुँहपका व बकरियों में चेचक का टीका लगावें।

प्रस्तावित तकनीकी कार्य योजना (खरीफ 2024)

कृषक प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1	धान की सीधी बुआई में अंकुरण पूर्व एवं पश्चात् खरपतवारनाशकों का आंकलन।	0.4	05
2	राइडिंग टाइप धान रोपण यंत्र का आंकलन।	0.4	10
3	सोयाबीन में रिज फरों और रिज बेड विधि से बोनी का आंकलन।	0.4	10
4	2 वर्ष पुराने आम वृक्ष आधारित कृषि-औषधीय प्रणाली में बैंगन/टमाटर का आंकलन।	0.4	05
5	बबूल आधारित पारंपरिक कृषि-वृक्ष प्रणाली में धान की GYV (JR81) का आंकलन।	0.4	05
6	कुपोषित शिशुओं के लिए ARF से समृद्ध वीनिंग फूड का आंकलन।	-	10
7	कुपोषित महिला किसानों के लिए कैल्शियम से भरपूर पौष्टिक खिचड़ी का आंकलन।	-	10

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1	धान-चना फसल प्रणाली के अंतर्गत उन्नत किस्म JR 206 का प्रदर्शन।	02	05
2	कोदो-सरसों फसल अनुक्रम के अंतर्गत कोदो की उन्नत किस्म JK 137 का प्रदर्शन।	02	05
3	ब्राड बेड प्लांटर से मक्का की बुआई का प्रदर्शन।	02	05
4	सिल्वी-चारागाह प्रणाली के अंतर्गत उन्नत चारा उत्पादन (अफ्रीकन टॉल मक्का) का प्रदर्शन।	02	05
5	सिल्वी-चारागाह प्रणाली के अंतर्गत नेपियर घास (IGFRI) के चारा उत्पादन का प्रदर्शन।	02	05
6	फलदार वृक्ष की छाया में हल्दी (किस्म-प्रगति) आधारित कृषि बागवानी प्रणाली का प्रदर्शन।	02	05
7	पोषण वाटिका का प्रदर्शन।	02	05
8	पोषण स्थिति सुधार हेतु CR धान-310 की उपयुक्तता का प्रदर्शन।	02	05

प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	कार्यक्रम संख्या	दिवस
1	कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण	17	17
2	कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी	2	2
3	ग्रामीण युवक युवतियां	3	3
4	प्रायोजित (कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण)	1	1
5	प्रायोजित (कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी)	1	1


संरक्षक
डॉ. पी.के. मिश्रा
कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर
प्रेरणाश्रोत

डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा **डॉ. एस.आर.के. सिंह** **डॉ. एस.के. त्रिपाठी**
संचालक विस्तार सेवायें निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान अधिष्ठाता
ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर जौन VII, भा.कृ.अनु.प., जबलपुर कृषि महाविद्यालय, रीवा

मार्गदर्शन **संपादक**
डॉ. मृगेन्द्र सिंह **ऋषिराज नेगी**
प्रधान वैज्ञानिक सह प्रमुख वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (कम्प्यूटर)

प्रकाशक - कृषि विज्ञान केन्द्र, कल्याणपुर, शहडोल

लेखन एवं संकलन	
● डॉ. (श्रीमती) अल्पना शर्मा	वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) 9301111646
● डॉ. बृजकिशोर प्रजापति	वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) 9012012068
● श्री दीपक चौहान	वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी) 9424023760
● श्री भागवत प्रसाद पन्डे	कार्यक्रम सहायक (कृषि वानिकी) 7697024787

 कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल द्वारा प्रसारित कृषि संदेशों एवं अन्य लाभकारी जानकारी को मोबाइल पर एस.एम.एस./व्हाट्सअप के माध्यम से नियमित प्राप्त करने हेतु साइड में दिये गये क्यू.आर.कोड को मोबाइल कैमरे से स्कैन करने पर आये हुए लिंक को क्लिक कर अपना नाम व मोबाइल नं. पंजीकृत कृषक पंजीयन फार्म में करायें।

बुक-पोस्ट

प्रति, _____

प्रेषक : _____

वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र
कल्याणपुर, शहडोल (म.प्र.)
E-mail : kvkshahdol@rediffmail.com